आपने लिखा-

संदर्भ का 29 वां अंक पढ़ा। श्री रमाकांत अग्निहोत्री के लेख 'बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता' (भाग-2) के विषय में मुझे बहुत कुछ कहना है:

'स लिखना' – लेखक ने स लिखने के दो प्रकार बताकर दूसरे प्रकार को सिखाने में क्या आपत्ति है पूछा है। मेरा मानना है कि पहला प्रकार – र स्र स ही सही है। चूंकि हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है और यह बाएं ये दाएं लिखी जाती है। अतः इसे ही सही माना जाएगा। दूसरी विधि में आपत्ति यह है कि बालक को सही दिशा पद्धति का ज्ञान नहीं होगा और वह लेखन की सही दिशा पद्धति का निर्वाह भविष्य में नहीं कर सकता।

'मात्राएं' लेखक का कहना है कि यह अवैज्ञानिक भाषा है, इसमें मात्राएं भी सीखना पड़ती हैं। मेरे विचार से यह भाषा वैज्ञानिक है इसलिए इसे वैज्ञानिक समझते हैं और मात्राएं इसलिए सीखना पड़ती हैं कि व्यंजन के साथ जुड़ी स्वर ध्वनि व स्वतंत्र स्वर ध्वनि में अंतर स्पष्ट हो जाए जैसे 'कई' एवं 'की'।

'लिपिदोष' रोमन लिपि की प्रशंसा करते हुए लेखक का कहना है कि शायद देवनागरी में ही ऐसा होता है कि एक ही वर्ण के कई रूप होते हैं और उसे चारों तरफ से बदला जा सकता है। रोमन लिपि में ऐसा कुछ नहीं। दाईं तरफ को बराबर लिखते जाइए, बस। इससे लगता है कि लेखक देवनागरी के दोष दिखाने के लिए रोमन लिपि को निर्दोष बता रहे हैं। जबकि रोमन का दोष यह है कि एक ही ध्वनि के लिए अनेक संकेत हैं जैसे 'क' के लिए K (King), C (Cat), Q (Queen), Ck (Cuckoo), Ch (Chemistry) आदि। इसी प्रकार U कहीं 'अ' है (But), तो कहीं 'उ' है (Put)। देवनागरी में यह दोष तो नहीं है। अपितु एक ध्वनि के लिए एक ही संकेत है।

लेखक को अगली शिकायत है कि 'इ-ई' तथा 'उ-ऊ' में कोई विशेष अंतर नहीं रह गया है। यदि हममें से ही कई शिक्षक इस अंतर को नहीं समझ पाए हैं तो वे इनका अंतर कैसे समझा पाएंगे। 60-70 के दशक में विद्यालयों में श्रुतलेख लिखाया जाता था, जिसमें मात्राओं का सही ज्ञान व अंतर समझाया जाता था। आज वह श्रुत लेख ही नहीं है तो वर्तनी में अशुद्धि तो होना ही है। तथा अशुद्धि के कारण अंतर समझना कठिन है। 'चिता व चीता' में अंतर है या नहीं पाठक स्वयं निर्णय करें।

'ऋ' – लेखक को अगली शिकायत ऋ से है। यह मूलतः संस्कृत स्वर-ध्वनि है जिसका उच्चारण जीभ द्वारा मूर्धा को स्पर्श (हल्का-सा) करने से होता है। संस्कृत व आधुनिक भारतीय भाषाओं के बीच पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि कई भाषाओं की पीढ़ियां गुज़री हैं, तो कुछ ध्वनियों के उच्चारण में अंतर आना स्वाभाविक है। लेखक आगे कहता है – "बच्चे ऋषि को रिशि, विष को विश . . . आदि लिखें तो उनका क्या दोष? उन्हें तो सही लिखने

के लिए सराहना मिलनी चाहिए, लेकिन उन्हें तो सदैव गलत लिखने के लिए डांट पड़ती है।'' महोदय प्रत्येक भाषा व लिपि के अपने कुछ नियम होते हैं। उन्हीं नियमों के कारण या यूं कहें, उन नियमों के पालन से ही भाषाएं जीवित रहती हैं। अन्यथा बुक (Buk पुस्तक) , अथवा केट (Ket बिल्ली) लिखने पर भी सराहना मिलनी चाहिए। क्यों इन वर्तनियों को गलत मानते हैं। वस्तुत: बच्चे को शुद्ध बोलना व शुद्ध पढ़ना सिखाया जाए तो 'रिशि' व 'ऋषि' के बीच अंतर वह स्वयं समझ लेगा।

'जैसा बोलो वैसा लिखो' लेखक ने इस उक्ति का अनर्थ प्रस्तुत किया है। वस्तुत: इसका अर्थ है कि देवनागरी लिपि में ध्वनि व ध्वनि संकेत में अंतर नहीं है, जैसा कि अन्य लिपियों में यह दोष है। रोमन लिपि को ही लें – A, B, C इनका ध्वनि संकेत है ए, बी, सी तथा ध्वनि देखें तो A कहीं अ है तो कहीं ए। B का ब, तथा C का कहीं क है तो कहीं स। देवनागरी में यह दोष नहीं है। अत: स्पेलिंग रटना नहीं पड़ता। यदि सही उच्चारण सिखाया जाए तो यह नहीं बताना पड़ेगा कि बोला जाएगा रिशि लेकिन लिखना है ऋषि। बालक खुद ऋषि उच्चारण करेगा व लिखेगा भी।

'क़ ख़ ग़ ज़ फ़' चूंकि अरबी भाषा की ध्वनियां हैं अत: इनके उच्चारण में अंतर तो होगा ही। भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि वही भाषा समृद्ध होती है जिसमें शब्द भंडार समृद्ध होता है। शब्द भंडार बढ़ाने के लिए अन्य भाषा के शब्दों को अपने में समाहित कर लेना यह किसी भी भाषा की विशेषता होती है। अत: कयामत, कसाई . . . आदि शब्दों को हिन्दी से निकालने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। यदि इन्हें निकाला जाता है तो अपार्टमेंट, वकील, इंजिनियर आदि शब्दों को भी निकाला जाना चाहिए। फिर कोई हिन्दी विरोधी सह निवास, अभिभाषक तथा अभियान्त्रिक आदि शब्दों का मज़ाक बनाएगा।

'वर्तनी के दोहरे प्रचलन' उपशीर्षक के अंतर्गत लेखक ने, 'हलन्त का क्या औचित्य है?' प्रश्न करके पाठकों को भ्रमित करने का प्रयास किया है। हलन्त का चिह्न केवल स्वर रहित व्यंजन के नीचे ही लगाया जाता है। संस्कृत व्याकरण में व्यंजन ध्वनि समूह को हल् शब्द से संबोधित किया है। जो ध्वनि स्वर रहित है उसे हल्+अंत हलन्त चिह्न से स्पष्ट किया जाता है। जैसे क् तथा क (क् + अ)। आगे समस्या बताई गई है कि श्रीमान् व महान् सही है या श्रीमान व महान। संस्कृत के अनुसार श्रीमान् तथा महान् रूप सही है किन्तु हिन्दी में दोनों रूप प्रचलित हैं।

इसी प्रकार बच्चों को समझाया जा सकता है कि 'गयी' क्यों सही है व 'गई' क्यों गलत? जाने की क्रिया का भूतकाल पुल्लिंग में 'गया' रूप बनता है न कि 'गआ' इसलिए स्त्रीलिंग में 'गयी' रूप बनेगा न कि 'गई'।

क्रम व कर्म में प्रयुक्त र नीचे व ऊपर कब जाता है? इसे स्पष्ट कर पाने में लेखक सफल नहीं हो पाया। वस्तुतः कारण यह है कि संयुक्त व्यंजन में जिसका उच्चारण पहले होगा वह स्वर रहित होगा। जैसे क्रम में 'क्' स्वर रहित है तथा 'र' स्वर युक्त जबकि कर्म में 'क' स्वर युक्त होते हुए स्वतंत्र है तथा स्वर रहित 'र' स्वर युक्त 'म' से जुड़ा है। इसी प्रकार 'अर्क' में स्वर रहित 'र्' स्वर युक्त 'क' में जुड़ा है। अतः स्वर रहित 'र्' ऊपर जाता है तथा स्वर युक्त 'र' नीचे।

लेखक ने पूरे लेख में कई जगह 'जटिल है, जटिल है' कहकर हिन्दी व देवनागरी की ध्वनियों व वर्तनी को जटिल सिद्ध करने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में मुझे अपने गणित के शिक्षक की बात याद आ रही है कि गणित कठिन विषय नहीं है लेकिन उसे 'कठिन है कठिन है' कहकर कठिन बना देते हैं। अतः शिक्षक का दायित्व है कि वह लिपि संबंधित समस्या के समाधान के लिए स्वयं ज्ञान प्राप्त करे तथा छात्रों को समझाएं।

अंत में यह जानकर आश्चर्य हुआ कि लेखक स्वयं भाषा विज्ञान के प्राध्यापक हैं, साथ ही प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम से भी जुड़े हैं। ऐसी स्थिति में उनसे हमारी अपेक्षा थी कि वे समस्याएं गिनवाने के बजाए कोई समाधन भी प्रस्तुत करते।

श्रीधर जोशी
बी-41, वैभव नगर, कनाड़िया रोड़,
इंदौर, मध्यप्रदेश

संदर्भ- 28 में बच्चों की भाषा सीखने की क्षमता के बारे में अग्निहोत्री जी का लेख पढ़कर अपनी समझ को दुबारा ठीक करने का मौका मिला। हर अंक में भाषा से संबंधित रमाकांत जी कुछ इसी प्रकार लिखते रहें तो भाषा समझने में मदद मिलेगी।

'छिपा रहस्य' कहानी बड़ी मर्मस्पर्शी लगी, मैंने उसे दो बार पढ़ा। 'परीक्षाएं और सिर्फ . . .' लेख अच्छा लगा। 'क्या बहे बिजली के तारों में' से काफी कुछ सीखने को मिला। परंतु सेलों को जोड़कर परिपथ बनवाने में मुझे तो डर लगता है।

'ठोस, द्रव, गैस और कांच' लेख में बार-बार 'रोचक बात यह है', 'ये मज़ेदार लगा', लिखा है पर हमें तो पढ़ने पर रोचक लगा ही नहीं। इसमें मज़ेदार क्या है, बताइएगा।

गंगा गुप्ता
घंसौर, ज़िला सिवनी,
मध्यप्रदेश

अंक 29 में सोमनाथ के मंदिर से संबंधित लेख पढ़कर लगा कि वास्तव में इतिहास ही घटनाओं को निरपेक्ष होकर देखने की दृष्टि दे सकता है, बशर्ते जब तक इतिहास की प्रस्तुति इतिहासकार तटस्थ होकर दे।

कुछ वर्षों पहले तक आम लोग अखबार में छपी खबरों पर सहजता से विश्वास कर लेते थे। लेकिन आज अखबार की अपेक्षा टी. वी. पर दी जाने वाली खबरों पर ज़्यादा भरोसा करते हैं क्योंकि

टी. वी. आंखों देखी है। फिर भी लोग यह भूल जाते हैं कि कैमरा भी सिर्फ वही दिखा रहा है जो उसके पीछे खड़ा आदमी दिखाना चाह रहा है। तात्पर्य यह कि हर युग में सूचना के स्रोतों की ईमानदारी पर घटना की प्रस्तुति निर्भर करती है।

अधिसंख्य इतिहासकारों ने तत्कालीन शक्तियों के हितलाभ के लिए इतिहास को वैसा प्रस्तुत किया है। इसलिए इतिहास वर्तमान को सुधारने में प्रेरक बनने की बजाए विध्वंसक रोल निभाता है।

सोमनाथ की घटना को मुख्यत: धार्मिक-साम्प्रदायिक मुद्दे की तरह इतिहासकारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता रहा है, इन परिस्थितियों में सोमनाथ जैसे लेख का अपना एक महत्व है।

महेश बसेड़िया
हाशगाबाद, मध्यप्रदेश

सामनाथ पर रोमिला थापर का लेख पढ़ा। यह लेख बेहद पसंद आया क्योंकि गुजरात में रहते हुए भी इस लेख में सोमनाथ के बारे में जो जानकारी दी गई है उससे मैं अंजान था। आज इस लेख को पढ़कर सोमनाथ के बारे में सही जानकारी मिली।

सिंथेटिक दूध पर लेख पढ़कर दूध परीक्षण की इच्छा जाग गई है। कृपया रसायनयुक्त फिल्टर पेपर भेजिए।

ठक्कर कमलेश कुमार (शिक्षक)
पीपरडी, शिहोर
ज़िला भावनगर, गुजरात

संदर्भ का अंक 28 मेरे हाथों में है। इसका प्रत्येक अंक संग्रहणीय होता है। 'संदर्भ' को लिखे एक पाठक के पत्र में मैंने पढ़ा कि उन्हें इसके प्रथम दर्शन एक कबाड़ी के 'जंक बॉक्स' में हुए। तब यह सब पढ़कर मुझे उन जैसे सज्जनों पर तरस आई जो 'संदर्भ' को रद्दी या कबाड़ समझते हैं।

'संदर्भ टीम' का पत्रिका प्रकाशन में विलम्ब से संबंधित तर्क लाज़िमी है। पत्रिका के तेवर और रूझान के अनुरूप स्तरीय सामग्रियों के नितांत अभाव जैसी परिस्थितियों के बीच दो के बजाय तीन-चार महीने में ही सही 'संदर्भ' अपने स्वभाव को बरकरार रखे हुए है; यही इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जानी चाहिए। दोष तो पाठकों का है जो अधिकाधिक व्यक्तियों को संदर्भ की धारा से नहीं जोड़ पा रहे हैं।

बहरहाल, 'संदर्भ' के अंक 28 में कैरन हैडॉक का लेख 'परीक्षाएं और सिर्फ परीक्षाएं' हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर कुठाराघात करता है। वास्तव में भारतीय विद्यालय केवल रट्टू तोते पैदा कर रहे हैं।

खूबसूरत, कमसीन, डेम्सल फ्लाई में 'शुक्राणुओं का सफरनामा' सचमुच रोचक लगा।

अगले अंक की प्रतीक्षा में।

मनीष मोहन गोरे
।खपुर विश्वविद्यालय
उत्तरप्रदेश

कहानियां भारतीय लेखकों की भी दें तो ज़्यादा बेहतर हो। साथ ही संदर्भ में कुछ और भी रोचक सामग्री का समावेश हो। यद्यपि विज्ञान पर आधारित सामग्री निश्चित रूप से काफी ज्ञानवर्धक होती है।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ
ग्वालियर, मध्यप्रदेश

आपके द्वारा भेजा फिल्टर पेपर मिला। हमने हमारे डेयरी के दूध का परीक्षण किया तो पाया कि हमारा दूध पूर्णतः शुद्ध है।

फिर 'राजस्थान सरस दूध थैली' के दूध के साथ भी प्रयोग दुहराकर देखा। उसमें फिल्टर पेपर डाला; जब उसको सफेद कागज़ पर रखा तो हल्का पीला नज़र आया। हम यह तय कर पाने में असमर्थ हैं कि दूध शुद्ध है या अशुद्ध। हम फिल्टर पेपर पोस्टकार्ड पर चिपका कर भेज रहे हैं, आप ही बताए।

हमारा सुझाव है कि आप अन्य खाद्य पदार्थों जैसेः चाय, चीनी, नमक, मिर्च, हल्दी, धनिया, बेसन, तेल इत्यादि चीज़ों में मिलावट का परीक्षण कैसे किया जाए इस पर भी लेख प्रकाशित कीजिए।

पवन जैन
नीमच खेड़ा, उदयपुर
राजस्थान, 331001

पोस्टकार्ड पर चिपकाई फिल्टर पट्टी रास्ते में अलग हो गई, इसलिए आपको दोबारा प्रयोग करके पट्टी फिर से भेजनी पड़ेगी।

– सं. म.

सदर्भ का 29वां अंक रोचक लगा। काजल कुमार नंदी का लेख मैंने अन्य शिक्षकों को भी पढ़ने के लिए दिया। मैंने इसे आजमाया, मज़ा आया, छात्राओं को मैंने प्रश्न पत्र बनाने, एवं कॉपी चैक करने पर नाम न लिखकर, बल्कि कोई 'कोड वर्ड' लिखने को कहा।

इतने बौद्धिक लेखों के बीच श्री शरद जोशी की व्यंग्य रचना 'एक शंख बिन कुतुबनुमा' ने जायका तो बदला ही, आनंद भी आया।

कविता शर्मा
हरदा, मध्यप्रदेश

शैक्षिक संदर्भ का अंक 29 हाथों में आया और सभी लेख साथ ही पढ़ डाले।

'एक दिन कक्षा में. . .' लेख पढ़ना शुरू ही किया था कि लगा अरे! यह तरीका तो मैं भी अपना रहा हूं। अंतर सिर्फ इतना है कि मैं योजना बनाकर पांचवीं, सातवीं और दसवीं तक की कक्षाओं में कर रहा हूं। काजल कुमार नंदी का लेख उत्कृष्ट रहा। सभी शिक्षकों से आशा है वे इस लेख से ज़रूर लाभ उठाएं क्योंकि यह प्रयोग काफी हद तक सफल है।

'चुंबक' तथा 'सिंथेटिक मिल्क' लेख भी उत्कृष्ट थे।

अरविंद कुरील
पंजाबी कॉलोनी,
जी. टी. बी. नगर (पूर्व)
मुंबई, 400037